



为同学们语文学习奠定基础倾力打造的 阅读精品

学生版  
★ 无障碍阅读 ★

XUE SHENG BAN  
WU ZHANG AI  
YUE DU  
《学生版无障碍阅读》编委会◎编著

# 成语故事

用最震撼心灵的思想，最通俗易懂的方式，扫除阅读障碍；最清新淡雅的版面，  
最贴近课标的编排，让同学们在轻松阅读中感受文学的博大精深，  
奠定牢固的阅读基础。

经典传世的名篇佳作，量身定制的精心选择，  
深入浅出的注释解读，适合学生的阅读伙伴。

增加孩子阅读量，提升孩子作文水平  
为孩子开启文学大门，让孩子接受文学滋养



APRILTIME

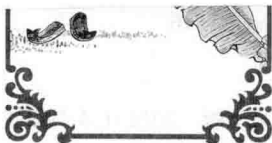
时代出版传媒股份有限公司  
北京时代华文书局

学生版  
无障碍阅读

XUE SHENG BAN  
WU ZHANG AI  
YUE DU

# 成语故事

《学生版无障碍阅读》编委会◎编著



APERTURE

时代出版传媒股份有限公司  
北京时代华文书局

## 图书在版编目 (CIP) 数据

成语故事 / 《学生版无障碍阅读》编委会编著. —

北京: 北京时代华文书局, 2014. 2

(学生版无障碍阅读)

ISBN 978-7-80769-406-9

I. ①成… II. ①学… III. ①汉语—成语—故事—青少年读物②汉语—成语—故事—少年读物 IV. ①H136.3-49

中国版本图书馆 CIP 数据核字 (2014) 第 028266 号

## 成语故事 (学生版无障碍阅读)

《学生版无障碍阅读》编委会 / 编 著

---

出 版 人 田海明 周殿富

选题策划 张新国

责任编辑 王其芳 姜富霞

出 版 时代出版传媒股份有限公司 <http://www.press-mart.com>  
北 京 时 代 华 文 书 局 <http://www.bjsdsj.com.cn>  
北京市东城区安定门外大街 136 号皇城国际大厦 A 座 8 楼 邮编: 100011

发 行 北京时代华文书局图书发行部 (010) 64267120 64267397  
印 刷 三河市祥达印刷包装有限公司 (0316) 3656589

规 格 910mm×1280mm 1/16

印 张 26

字 数 320 千字

版 次 2014 年 5 月第 1 版 2014 年 5 月第 1 次印刷

书 号 ISBN 978-7-80769-406-9

定 价 21.80 元

※ 如发现因印装质量影响阅读, 请与印刷厂联系调换 ※ 版权所有侵权必究



## 前言



随着人们对祖国传统文化认识的加深，中国传统文化越来越被人们所重视，在国内掀起了新一轮的中国风。关于我国传统文化的著作甚多，如果要想快速、高效地学习，那么我们应该读哪些经典著作呢？选择之后又如何来读呢？

针对于此，我们编辑策划了这套丛书。本丛书精选了几十本相关书目，精心编排。《学生版无障碍阅读》是一套真正意义上的无障碍阅读丛书，我们在文言文书中设置了原文、译文、注释、评析等板块，真正体现无障碍之处就是我们的注释部分、译文部分和评析部分。

注释部分，中国传统文化著作的原文有一些是文言文，注释显得尤为重要。我们一改其他图书把注释放在图书底角或者文章结尾处的习惯，而是更科学地把注释放在了文中，这样读者在发现生僻字或者难懂词语的时候，能在第一时间看到生僻字或者词语的读音及含义，而不必再去底角或者文章结尾处查找，这样就能保持阅读者顺利阅读，不用担心因为反复查找生僻字、词而对阅读失去兴趣。



译文部分，为了方便阅读，我们把译文部分分成若干段落，每一段原文后都有一段译文跟随，目的是让读者在读完原文后第一时间看到译文。同时，读者需要看到的是原汁原味的译文，而不是变了味的译文。

我们在文章的结尾处加入了评析，原因有两点：一是把读者不能理解的、晦涩的语句置于特定的环境里，细细揉碎，慢慢说来，从而加深印象；二是把文中的一些观点、主张提升到一定的高度，从社会、政治、哲学等方面进行剖析，方便读者阅读和思考。

本套丛书在选材上没有局限于古代文学名著，为了更好地帮助学生学习语文知识，提高自身修养，我们在选取古典文学精华的同时还选取了现代文学中对语文学习和文学修养有帮助的内容，如《现代散文鉴赏辞典》《名人名言》《朱自清散文精选》《智慧行囊》《鲁迅文学精选》《中华上下五千年》等，力求对同学们的成长起到有益的帮助。



## 目 录

|           |    |
|-----------|----|
| 一见如故      | 1  |
| 一叶障目      | 2  |
| 一丘之貉      | 3  |
| 一衣带水      | 4  |
| 一发千钧      | 5  |
| 一丝不苟      | 6  |
| 一鸣惊人      | 7  |
| 一字千金      | 8  |
| 一举两得      | 10 |
| 一败涂地      | 11 |
| 一钱不值      | 12 |
| 一窍不通      | 13 |
| 一筹莫展      | 14 |
| 一箭双雕      | 15 |
| 一问三不知     | 16 |
| 一人得道，鸡犬升天 | 17 |
| 一笔勾销      | 18 |
| 一毛不拔      | 19 |
| 一诺千金      | 20 |
| 一意孤行      | 22 |
| 一目十行      | 23 |
| 一言九鼎      | 24 |
| 二桃杀三士     | 24 |
| 七擒七纵      | 26 |



|           |    |
|-----------|----|
| 七步之才      | 28 |
| 八仙过海      | 29 |
| 入木三分      | 30 |
| 九死一生      | 31 |
| 九牛一毛      | 32 |
| 人言可畏      | 33 |
| 人面桃花      | 34 |
| 人非圣贤，孰能无过 | 36 |
| 人杰地灵      | 37 |
| 人人自危      | 39 |
| 人心如面      | 40 |
| 力不从心      | 42 |
| 下笔成章      | 43 |
| 与虎谋皮      | 44 |
| 与人为善      | 45 |
| 与民同乐      | 46 |
| 万事俱备，只欠东风 | 46 |
| 三寸之舌      | 47 |
| 三分鼎足      | 49 |
| 三顾茅庐      | 50 |
| 三过其门而不入   | 51 |
| 三生有幸      | 52 |
| 大义灭亲      | 53 |
| 大公无私      | 55 |
| 大笔如椽      | 56 |
| 大材小用      | 57 |
| 大逆不道      | 59 |
| 口蜜腹剑      | 60 |
| 口若悬河      | 61 |
| 口无择言      | 62 |



|        |    |
|--------|----|
| 义无反顾   | 63 |
| 千变万化   | 64 |
| 千夫所指   | 65 |
| 千载难逢   | 66 |
| 千钧一发   | 67 |
| 千里鹅毛   | 68 |
| 亡羊补牢   | 69 |
| 门可罗雀   | 70 |
| 门庭若市   | 71 |
| 马革裹尸   | 72 |
| 马首是瞻   | 73 |
| 飞扬跋扈   | 74 |
| 飞蛾扑火   | 75 |
| 飞鹰走狗   | 76 |
| 才高八斗   | 77 |
| 土崩瓦解   | 78 |
| 小心翼翼   | 79 |
| 匹夫之勇   | 80 |
| 匹夫有责   | 81 |
| 井底之蛙   | 82 |
| 太公钓鱼   | 83 |
| 车载斗量   | 84 |
| 车水马龙   | 85 |
| 车辙马迹   | 86 |
| 开卷有益   | 87 |
| 开天辟地   | 88 |
| 开诚布公   | 89 |
| 开源节流   | 90 |
| 五十步笑百步 | 91 |
| 天衣无缝   | 92 |



|                |     |
|----------------|-----|
| 天罗地网·····      | 94  |
| 天花乱坠·····      | 95  |
| 天经地义·····      | 96  |
| 天下无双·····      | 97  |
| 天真烂漫·····      | 98  |
| 天下第一·····      | 99  |
| 无功受禄·····      | 100 |
| 无可奈何·····      | 101 |
| 无面目见江东父老·····  | 102 |
| 不自量力·····      | 103 |
| 不可救药·····      | 104 |
| 不拘一格·····      | 106 |
| 不拘小节·····      | 107 |
| 不屈不挠·····      | 108 |
| 不学无术·····      | 109 |
| 不能自拔·····      | 110 |
| 不堪回首·····      | 111 |
| 不寒而栗·····      | 112 |
| 不可同日而语·····    | 113 |
| 不为五斗米折腰·····   | 115 |
| 不入虎穴，焉得虎子····· | 116 |
| 不识庐山真面目·····   | 117 |
| 中原逐鹿·····      | 118 |
| 见利忘义·····      | 119 |
| 见怪不怪·····      | 121 |
| 见危授命·····      | 122 |
| 日暮途穷·····      | 123 |
| 毛遂自荐·····      | 124 |
| 乌合之众·····      | 126 |
| 牛角挂书·····      | 127 |



|              |     |
|--------------|-----|
| 分庭抗礼·····    | 128 |
| 分道扬镳·····    | 129 |
| 手不释卷·····    | 130 |
| 风声鹤唳·····    | 131 |
| 风马牛不相及·····  | 133 |
| 风吹草动·····    | 134 |
| 长驱直入·····    | 135 |
| 为民请命·····    | 136 |
| 为虎作伥·····    | 138 |
| 心有灵犀一点通····· | 139 |
| 方寸已乱·····    | 140 |
| 文君司马·····    | 141 |
| 双管齐下·····    | 142 |
| 水中捞月·····    | 143 |
| 水深火热·····    | 145 |
| 水落石出·····    | 146 |
| 水滴石穿·····    | 147 |
| 以身试法·····    | 148 |
| 以貌取人·····    | 149 |
| 以古非今·····    | 150 |
| 以卵投石·····    | 151 |
| 以功赎罪·····    | 151 |
| 从天而降·····    | 152 |
| 从善如流·····    | 153 |
| 斗酒学士·····    | 155 |
| 木牛流马·····    | 155 |
| 厉兵秣马·····    | 157 |
| 世外桃源·····    | 158 |
| 功亏一篑·····    | 160 |
| 功成不居·····    | 161 |



|                    |     |
|--------------------|-----|
| 未雨绸缪·····          | 161 |
| 扑朔迷离·····          | 163 |
| 打草惊蛇·····          | 164 |
| 东山再起·····          | 165 |
| 东窗事发·····          | 166 |
| 东施效颦·····          | 167 |
| 叶公好龙·····          | 168 |
| 只许州官放火，不许百姓点灯····· | 169 |
| 四面楚歌·····          | 170 |
| 四海之内皆兄弟·····       | 172 |
| 四体不勤，五谷不分·····     | 173 |
| 出人头地·····          | 174 |
| 出奇制胜·····          | 175 |
| 出类拔萃·····          | 176 |
| 尔虞我诈·····          | 177 |
| 鸟尽弓藏·····          | 178 |
| 令人发指·····          | 179 |
| 失之毫厘，差之千里·····     | 181 |
| 乐极生悲·····          | 182 |
| 乐不思蜀·····          | 183 |
| 生灵涂炭·····          | 184 |
| 白驹过隙·····          | 185 |
| 白虹贯日·····          | 186 |
| 司空见惯·····          | 188 |
| 司马昭之心·····         | 189 |
| 对牛弹琴·····          | 190 |
| 对症下药·····          | 191 |
| 民不聊生·····          | 192 |
| 民以食为天·····         | 193 |
| 过河拆桥·····          | 194 |



|                |     |
|----------------|-----|
| 半途而废·····      | 196 |
| 必争之地·····      | 197 |
| 发奸擿伏·····      | 198 |
| 归马放牛·····      | 199 |
| 礼贤下士·····      | 200 |
| 目不识丁·····      | 201 |
| 平易近人·····      | 202 |
| 成也萧何，败也萧何····· | 203 |
| 老马识途·····      | 204 |
| 老生常谈·····      | 206 |
| 老牛舐犊·····      | 207 |
| 死有余辜·····      | 208 |
| 死不瞑目·····      | 209 |
| 有恃无恐·····      | 210 |
| 百步穿杨·····      | 211 |
| 百感交集·····      | 213 |
| 百丈竿头·····      | 214 |
| 百折不挠·····      | 215 |
| 刚愎自用·····      | 216 |
| 当务之急·····      | 217 |
| 当局者迷·····      | 218 |
| 同工异曲·····      | 219 |
| 同甘共苦·····      | 220 |
| 同病相怜·····      | 222 |
| 同流合污·····      | 223 |
| 同舟共济·····      | 224 |
| 名列前茅·····      | 225 |
| 名正言顺·····      | 226 |
| 名不副实·····      | 227 |
| 名落孙山·····      | 228 |



|           |     |
|-----------|-----|
| 自相矛盾····· | 229 |
| 自惭形秽····· | 230 |
| 安步当车····· | 231 |
| 安居乐业····· | 233 |
| 安然无恙····· | 234 |
| 安如泰山····· | 235 |
| 安乐窝·····  | 236 |
| 何足挂齿····· | 236 |
| 近水楼台····· | 238 |
| 耳视目听····· | 239 |
| 负荆请罪····· | 240 |
| 各得其所····· | 241 |
| 光彩夺目····· | 242 |
| 汗马功劳····· | 243 |
| 汗流浹背····· | 243 |
| 好生恶杀····· | 245 |
| 回天之力····· | 246 |
| 回光返照····· | 247 |
| 交头接耳····· | 248 |
| 买椟还珠····· | 249 |
| 先发制人····· | 250 |
| 先声夺人····· | 251 |
| 先斩后奏····· | 252 |
| 兴高采烈····· | 253 |
| 兴师动众····· | 254 |
| 众叛亲离····· | 255 |
| 众志成城····· | 256 |
| 守株待兔····· | 257 |
| 守口如瓶····· | 258 |
| 扬扬得意····· | 259 |



|              |     |
|--------------|-----|
| 扬汤止沸·····    | 260 |
| 曲尽其妙·····    | 261 |
| 任劳任怨·····    | 263 |
| 如释重负·····    | 264 |
| 杀一儆百·····    | 265 |
| 伤风败俗·····    | 266 |
| 危在旦夕·····    | 267 |
| 行尸走肉·····    | 269 |
| 朽木不雕·····    | 269 |
| 饮鸩止渴·····    | 270 |
| 身在曹营心在汉····· | 271 |
| 完璧归赵·····    | 272 |
| 穷兵黩武·····    | 274 |
| 言过其实·····    | 275 |
| 言不由衷·····    | 277 |
| 尾大不掉·····    | 278 |
| 纸上谈兵·····    | 279 |
| 纸醉金迷·····    | 280 |
| 纵虎归山·····    | 281 |
| 鸡鸣狗盗·····    | 282 |
| 鸡犬不宁·····    | 284 |
| 鸡虫得失·····    | 285 |
| 刻舟求剑·····    | 286 |
| 邯郸学步·····    | 287 |
| 巫山云雨·····    | 288 |
| 弄巧成拙·····    | 289 |
| 弄兵横池·····    | 290 |
| 运筹帷幄·····    | 291 |
| 走马看花·····    | 292 |
| 抛砖引玉·····    | 293 |



|           |     |
|-----------|-----|
| 投笔从戎····· | 294 |
| 呆若木鸡····· | 295 |
| 旷日持久····· | 296 |
| 伯乐相马····· | 297 |
| 兵不血刃····· | 298 |
| 兵不厌诈····· | 299 |
| 兵贵神速····· | 300 |
| 沧海桑田····· | 301 |
| 改弦易辙····· | 302 |
| 改过自新····· | 304 |
| 囫圇吞枣····· | 305 |
| 克勤克俭····· | 306 |
| 克己奉公····· | 307 |
| 困兽犹斗····· | 308 |
| 劳苦功高····· | 309 |
| 劳思逸淫····· | 311 |
| 劳而无功····· | 312 |
| 两败俱伤····· | 313 |
| 两虎相斗····· | 314 |
| 两袖清风····· | 315 |
| 李代桃僵····· | 316 |
| 声东击西····· | 317 |
| 声色俱厉····· | 319 |
| 杞人忧天····· | 320 |
| 求之不得····· | 321 |
| 拔苗助长····· | 322 |
| 空中楼阁····· | 323 |
| 空前绝后····· | 324 |
| 夜以继日····· | 325 |
| 夜郎自大····· | 326 |



|              |     |
|--------------|-----|
| 居安思危·····    | 327 |
| 孤注一掷·····    | 328 |
| 卧薪尝胆·····    | 329 |
| 丧心病狂·····    | 331 |
| 丧家之犬·····    | 332 |
| 势如破竹·····    | 333 |
| 杯弓蛇影·····    | 334 |
| 杯水车薪·····    | 335 |
| 奇货可居·····    | 336 |
| 斩草除根·····    | 338 |
| 苛政猛于虎·····   | 339 |
| 英雄无用武之地····· | 340 |
| 画龙点睛·····    | 341 |
| 画饼充饥·····    | 342 |
| 画蛇添足·····    | 344 |
| 青云直上·····    | 345 |
| 直言不讳·····    | 347 |
| 拨云见日·····    | 348 |
| 指鹿为马·····    | 349 |
| 柳暗花明·····    | 350 |
| 相见恨晚·····    | 351 |
| 鬼斧神工·····    | 352 |
| 狡兔三窟·····    | 353 |
| 恃才傲物·····    | 355 |
| 哀鸿遍野·····    | 356 |
| 南柯一梦·····    | 357 |
| 南山可移·····    | 358 |
| 南辕北辙·····    | 359 |
| 怒发冲冠·····    | 360 |
| 前功尽弃·····    | 362 |



|      |     |
|------|-----|
| 前无古人 | 363 |
| 神机妙算 | 364 |
| 素面朝天 | 365 |
| 唇亡齿寒 | 367 |
| 秦晋之好 | 368 |
| 秦镜高悬 | 369 |
| 爱屋及乌 | 371 |
| 班门弄斧 | 372 |
| 乘风破浪 | 373 |
| 乘人之危 | 374 |
| 恶贯满盈 | 375 |
| 高山流水 | 376 |
| 家鸡野雉 | 377 |
| 家徒四壁 | 378 |
| 脍炙人口 | 379 |
| 狼狈不堪 | 380 |
| 道听途说 | 381 |
| 得意忘形 | 382 |
| 鸿鹄之志 | 384 |
| 渐入佳境 | 385 |
| 脚踏实地 | 386 |
| 惊弓之鸟 | 387 |
| 梁上君子 | 388 |
| 排难解纷 | 389 |
| 推心置腹 | 391 |
| 望梅止渴 | 392 |
| 望门投止 | 393 |
| 望洋兴叹 | 395 |
| 雪中送炭 | 396 |

